सत्यमेव जयते

नवकिरण

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्ष 2023

42वां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

‘नवकिरण’ हिन्दी पत्रिका के 41वें अंक का विमोचन

नवकिरण

42वां अंक

"हिंदी की कहानी"

मैं भारत माँ के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूँ,
मैं सब की जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूँ।
मेरी बोली में मीरा ने मनमोहक काव्य सुनाया है,
कवि सूरदास के गीतों में मैंने कम मान न पाया है।
तुलसीकृत रामचरितमानस मेरे मुख में चरितार्थ हुई,
विद्वानों संतो की वाणी गुंजित हुई, साकार हुई।
भारत की जितनी भाषाएँ सब मेरी सखी सहेली हैं,
हम आपस में क्यों टकराए हम बहनें भोली भाली हैं।
सब भाषाओं के शब्दों को मैंने गले लगाया है,
इसलिए भारत के जन-जन ने मुझे अपनाया है।
मैंने अनगिनत फिल्मों में खूब धूम मचाई है,
इसलिए विदेशियों ने भी अपनी प्रीति दिखाई है।
सीधा-साधा रूप ही मेरा सबके मन को भाता है,
भारत के जनमानस से मेरा सदियों पुराना नाता है।
मैं भारत माँ के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूँ,
मैं सब की जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूँ।

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

नवकिरण हिंदी पत्रिका 42वां अंक

नवकिरण परिवार

श्री शैलेन्द्र विक्रम सिंह, प्रधान महालेखाकार
मुख्य संरक्षक

श्री रणजीत सिंह, वरि. उप-महालेखाकार
संरक्षक

श्री अवनीश कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
प्रधान संपादक

सुश्री पूजा सिंह मंडल, हिंदी अधिकारी
संपादक

श्री विक्रम सिंह, कनि. अनुवादक
उप संपादक

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''नवकिरण'' के 42वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। यह पत्रिका हमें आपके कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत करवाती रहेगी। साथ ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्टता को बनाए रखेगी। राजभाषा हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है और इसमें सबसे ज्यादा योगदान अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपने में सम्मिलित करने का भी रहा है। यदि हिंदी को और आगे बढ़ाना है एवं ज्यादा स्वीकार्यता बढ़ानी है तो उसके लिए हिंदी को और अधिक व्यावहारिक बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए अधिक कठिन शब्दों को त्यागकर अन्य प्रचलित भाषाओं विशेषतः क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके हिंदी और आगे बढ़ सकती है। इसलिए मेरी कामना है कि यह पत्रिका भी ऐसे मिल-जुली भाषाओं के लेखों को अधिक से अधिक प्रोत्सहित करेगी।

(संजीव गोयल
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
चण्डीगढ़।

संदेश

हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 42वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्मिकों की रचनात्मक प्रवृति को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। ये हमें कार्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं गतिविधियों से भी अवगत करवाती हैं। ये राजभाषा हिंदी के प्रति श्रद्धा भाव को जागृत करते हुए राष्ट्रीय प्रेम को भी ऊजागर करती हैं।

पत्रिका के नियमित प्रकाशन में संपादक मंडल, सृजनशील रचनाकारों एवं जागरूक पाठकगण का सहयोग सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार अपना सहयोग प्रदान करके पत्रिका की निरंतरता को बनाए रखने में सफल होंगे।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रहेगी। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

नवनीत

(नवनीत गुप्ता)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

यह प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 42वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है। साथ ही यह एक सशक्त और वैज्ञानिक भाषा भी है। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है। गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' की दीर्घ यात्रा इस दिशा में अपने महत्वपूर्ण योगदान की परिचायक है। पत्रिका के सभी रचनाकार एवं लेखक प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होनें अपनी लेखनी एवं विचारों के माध्यम से पत्रिका को अंलकृत करने में योगदान दिया है।

(वी.एस. वेंकटनाथन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं,
चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि विभागीय पत्रिका 'नवकिरण' के 42वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विभागीय कार्यालयों ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार को नई दिशा प्रदान की है।

संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाएं राजभाषा हिन्दी के अनुपालन के संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करती है साथ ही कार्मिकों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी हैं। विभागीय पत्रिकाओं द्वारा कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों की रचनाएं प्रकाश में आई हैं तथा उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का सार्थक मंच प्रदान हुआ है। ये पत्रिकाएं समधर्मी कार्यालयों से सेतु का कार्य भी करती हैं।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका का हिन्दी लेखन एवं पठन के प्रति उत्कृष्ट योगदान रहेगा। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(सुश्री नाज़ली जे. शाईन)
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 42वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से संबंधित सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादकों को बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित हुई है। हिंदी पत्रिका विभागीय सदस्यों को अपना हुनर तराशने का अवसर प्रदान कराती है और यह हिंदी भाषा के सुनहरे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक है। ये पत्रिकाएं समधर्मी कार्यालयों के मध्य सामंजस्य का कार्य करती हैं, जिससे एक-दूसरे कार्यालयों की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती रहती है।

'नवकिरण' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतू मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों का पुनः अभिनन्दन करता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(तेग सिंह)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़

मुख्य संरक्षक की कलम से

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 42वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। कार्यालयीन पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण, प्रेम और निष्ठा का प्रतीक है।

हिंदी एक मधुर भाषा होने के साथ-साथ वैज्ञानिक रूप से समृद्ध भाषा है। यह हमारी आत्मनिर्भरता का भी सशक्त आधार है। राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित होते हुए हम सब का संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हो सके।

मुझे आशा है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में समर्पित 'नवकिरण' पत्रिका का यह अंक भी कार्यालय के कार्मिकों के लिए कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतू रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

'नवकिरण' पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(शैलेन्द्र विक्रम सिंह)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा,
चण्डीगढ़

संरक्षक की कलम से

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 42वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय के कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा से हमारा परिचय करवाती है बल्कि उनकी रचनात्मकता को मंच भी प्रदान करती है।

हिंदी भाषा बहुत ही सहज, सरल भाषा है। अपनी भाषा में हम बहुत ही आसानी से अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी कर्मी इस बात को समझेंगे और अपना काम अधिक से अधिक हिंदी में करेंगे। इससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी सहायता होगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना करते हुए मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

'नवकिरण' पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(रणजीत सिंह)
वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा,
चण्डीगढ़

सम्पादकीय

हिन्दी विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा है। यह हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। आज हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। हिंदी हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक, पढ़े-लिखे से अनपढ़ व्यक्ति तक सभी हिंदी भाषा को आसानी से समझ और बोल सकते हैं। यही सरलता और बोधगम्यता हमारी हिंदी भाषा की पहचान है। जब अंग्रेजी भाषा ज्यादा प्रचलित नहीं थी, तब हमारी हिंदी भाषा ही भारतियों और भारत से बाहर रह रहे लोगों के लिए सम्मानीय थी। परन्तु बदलते समय में अंग्रेजी के प्रचलन और उसके प्रति लोगों की उदारता ने हिंदी की जड़ों को हिला के रख दिया है और आज अपनी ही भाषा का प्रचार-प्रसार करने के लिए ''हिंदी दिवस'' मनाना पड़ रहा है।

नवकिरण का 42वां अंक आप सभी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए यही आशा करती हूँ कि हम सभी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे और हिंदी को उसका उचित मान सम्मान दिलाने में अपनी ओर से प्रयास का एक कदम अवश्य उठाएंगे। इसी संदर्भ में भारतेन्दु हरीशचन्द्र ने बहुत सटीक लिखा है-

''निज भाषा उन्नति अहैं सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय के सूल।''

प्रस्तुत अंक में कार्यालय के कर्मियों द्वारा रचित लेख, कहानियां, कविताएं इत्यादि के साथ कार्यालय में वर्ष भर हुए कार्यक्रमों की झाँकी भी प्रस्तुत की गई है। आशा है कि पूर्व वर्षों की भांति यह आपकी उपेक्षाओं पर खरा उतरेगी। पत्रिका को और अधिक पठनीय और रूचिकर बनाने में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

पूजा सिंह

पूजा सिंह मंडल,
हिन्दी अधिकारी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
हरियाणा, चंडीगढ़

अनुक्रमणिका

क.सं	विवरण	लेखक सर्व श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1.	गृहमंत्री का संदेश	.....	3-4
2.	संपादक की कलम से	पूजा सिंह मंडल	12
3.	प्रतिक्रियाएं	.....	14-19
4.	वार्षिक कार्यक्रम	.....	20-21
5.	हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता	पूजा सिंह मंडल	22-23
6.	एक दिन का देश भक्त	आशीष कुमार	24-25
7.	जीवन	नरेन्दर बौद्ध	26-27
8.	प्रेम	अंकित कुमार ठाकुर	28-29
9.	कुछ पल ठहर तो सही	पंकज अरोड़ा	30-31
10.	बेरोजगार और कुंवारा	आशीष	32-34
11.	कविता	राविन्द्र कुमार	35
12.	एक सप्ताह	संदीप कुमार मान	36
13.	आज फर्ज़ का इम्तिहान	विक्रम सिंह	37-38
14.	मायका	लोकेश	39
15.	वह कौन है	राजकुमार	40
16.	छोड़ चला माँ मैं	विक्रम सिंह	41-42
17.	हिंदी दिवस/पखवाड़ा 2022	.....	43
18.	सेवानिवृति सूची	.....	44-45
19.	विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी	.....	46
20.	हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजयी प्रतिभागी	.....	47
21.	नवकिरण के श्रेष्ठ लेखकों हेतु पुरस्कार	.....	47

प्रतिक्रियाएँ

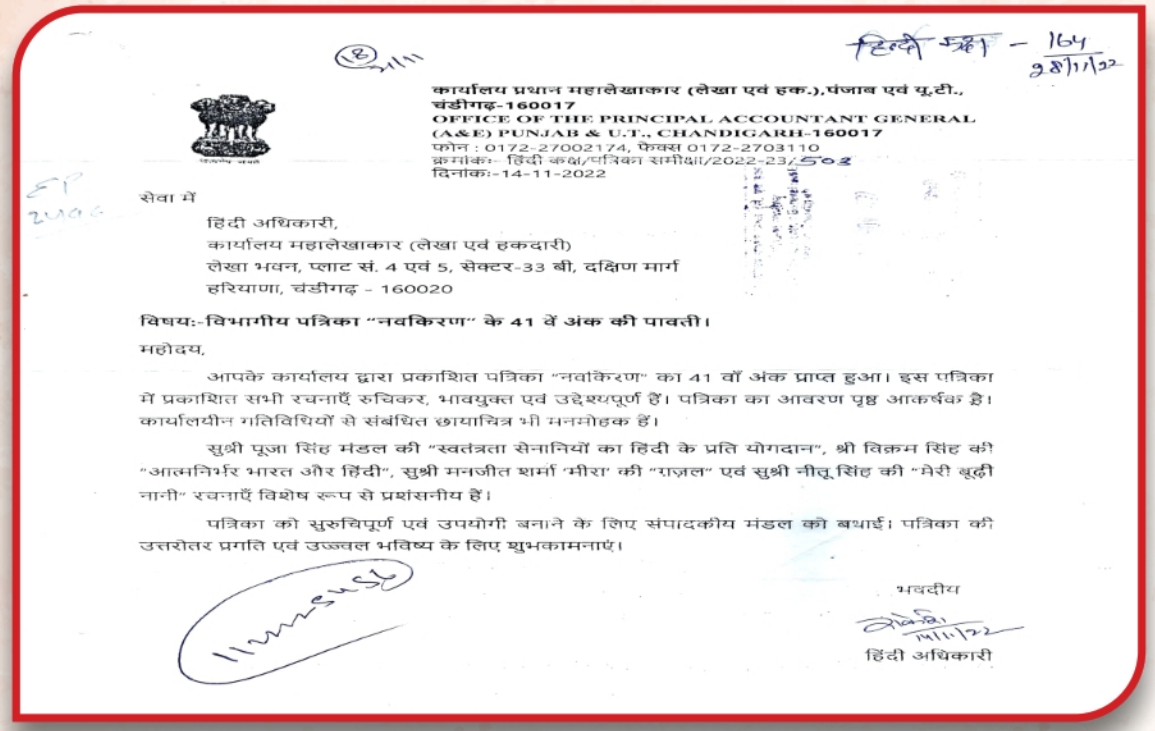

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2700174, फैक्स 0172-2703110
क्रमांक:- हिंदी कार्य/पत्रिका समीक्षा/2022-23/502
दिनांक:-14-11-2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
लेखा भवन, प्लाट सं. 4 एवं 5, सेक्टर-33 बी, दक्षिण मार्ग
हरियाणा, चंडीगढ़ - 160020

विषय:-विभागीय पत्रिका "नवकिरण" के 41 वें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "नवकिरण" का 41 वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

सुश्री पूजा सिंह मंडल की "स्वतंत्रता सेनानियों का हिंदी के प्रति योगदान", श्री विक्रम सिंह की "आत्मनिर्भर भारत और हिंदी", सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की "राज़ल" एवं सुश्री नीतू सिंह की "मेरी बूढ़ी नानी" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

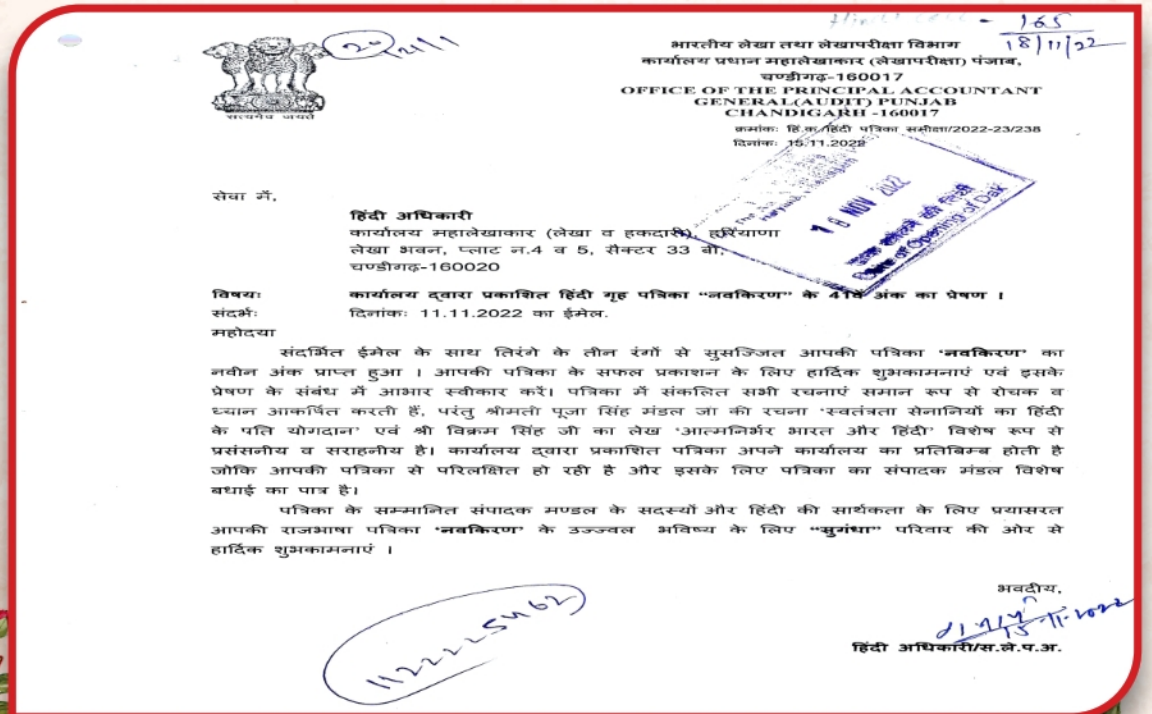

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT) PUNJAB
CHANDIGARH -160017
क्रमांक: हि.का./हिंदी पत्रिका समीक्षा/2022-23/238
दिनांक: 15.11.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा
लेखा भवन, प्लाट न.4 व 5, सैक्टर 33 बी,
चण्डीगढ़-160020

विषय: **कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "नवकिरण" के 41वें अंक का प्रेषण ।**
संदर्भ: दिनांक: 11.11.2022 का ईमेल.
महोदया

संदर्भित ईमेल के साथ तिरंगे के तीन रंगों से सुसज्जित आपकी पत्रिका **'नवकिरण'** का नवीन अंक प्राप्त हुआ । आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से रोचक व ध्यान आकर्षित करती हैं, परंतु श्रीमती पूजा सिंह मंडल जा की रचना 'स्वतंत्रता सेनानियों का हिंदी के प्रति योगदान' एवं श्री विक्रम सिंह जी का लेख 'आत्मनिर्भर भारत और हिंदी' विशेष रूप से प्रसंसनीय व सराहनीय है। कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका अपने कार्यालय का प्रतिबिम्ब होती है जोकि आपकी पत्रिका से परिलक्षित हो रही है और इसके लिए पत्रिका का संपादक मंडल विशेष बधाई का पात्र है।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका **'नवकिरण'** के उज्ज्वल भविष्य के लिए **"सुगंधा"** परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी/स.ले.प.अ.

जैसे रंगों के मिलने से खिलता है बसंत, वैसे भाषाओं की मिश्री सी बोली है हिंदी।

प्रतिक्रियाएँ

हिं.क.-173
08-12-22

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता020 700-
फोन: .033-2289/4111/12/13फैक्स: 033-2289-4060
ई मेल:-broedkolkata@cag.gov.in

सं.महा.ले.प.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/404

24 NOV 2022
दिनांक:-24.11.2022

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
हरियाणा,
चण्डीगढ़- 160 020

विषय:- हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 41वें अंक की अग्रिमस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 41वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "नवकिरण" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर सुश्री पूजा सिंह जी का लेख '**स्वतंत्रता सेनानियों का हिन्दी के प्रति योगदान**', सुश्री शिक्षा गुप्ता जी की कविता '**शुभ विचार**', श्री अंकित कुमार ठाकुर जी का लेख '**वृक्ष की महत्ता**', श्री नरेन्द्र कुमार जी की कविता '**घर**', और श्री कुमार शर्मा अनिल जी का लेख '**मन की बात**' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चय ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्वस्तु फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "नवकिरण" के उज्जवल भविष्य के लिए आकांक्षा परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

12222 9879

हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी

हिं.क.-178
14/12/22

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in	सत्यमेव जयते	INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU, 361, ANNA SALAI, CHENNAI-18 Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 37272-140 दिनांक 15/11/2022

सेवा में, हिन्दी अधिकारी कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा चंडीगढ़ 5 दक्षिण मार्ग सेक्टर 33 B चंडीगढ़ 160020	To, Hindi Officer Office of the Accountant General (A and E) Haryana Chandigarh 5 Dakshin Marg Sector 33B Chandigarh 160020

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "नवकिरण" 41 वें **अंक** की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "नवकिरण" का 41वें **अंक** प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक मे प्रकाशित **श्री विक्रम सिंह द्वारा लिखित "आत्मनिर्भर भारत और हिंदी", श्री कुमार शर्मा द्वारा लिखित "मन की बात", श्री राही दरवेश द्वारा लिखित कविता "उड़ान", सुश्री नीलू सिंह द्वारा लिखित "मेरी बूढ़ी नानी" और श्री लोकेश द्वारा लिखित कविता "मेरी माँ" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

1222230292

एम० सु० करन
(एम. सुधाकरन)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी)

प्रतिक्रियाएँ

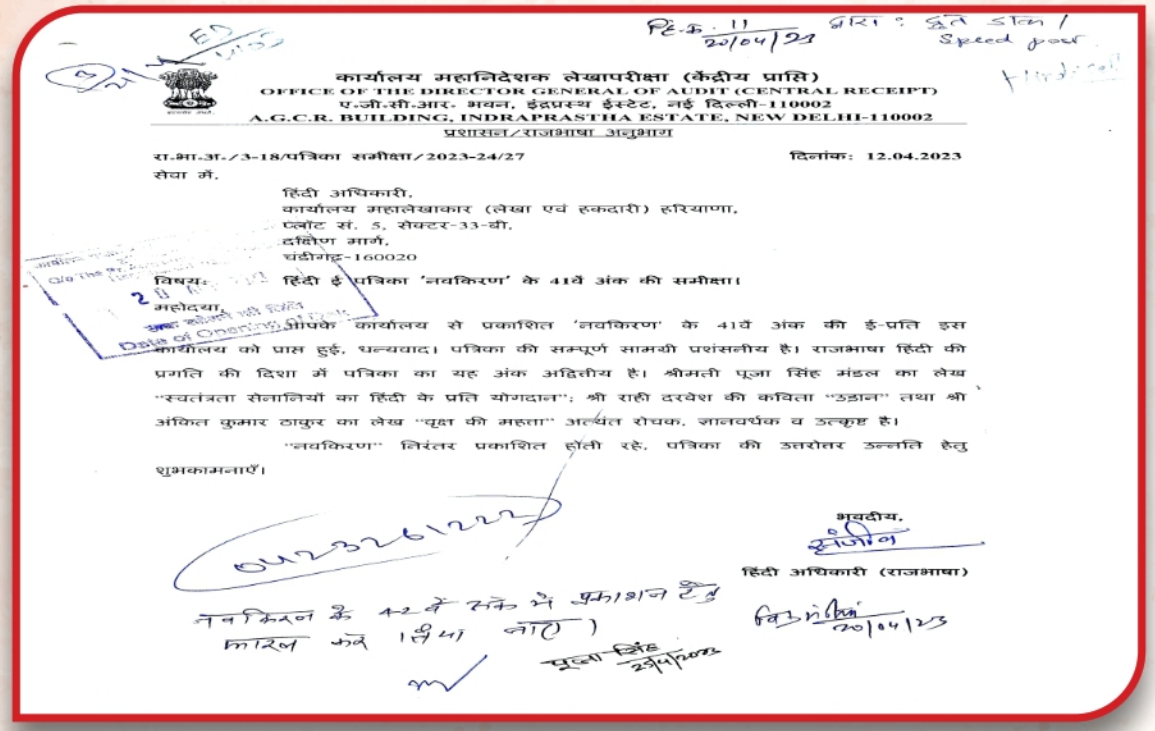

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति)
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL RECEIPT)
ए.जी.सी.आर. भवन, इंद्रप्रस्थ ईस्टेट, नई दिल्ली-110002
A.G.C.R. BUILDING, INDRAPRASTHA ESTATE, NEW DELHI-110002
प्रशासन/राजभाषा अनुभाग

रा.भा.अ./3-18/पत्रिका समीक्षा/2023-24/27 दिनांक: 12.04.2023

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा,
प्लॉट सं. 5, सेक्टर-33-बी,
दक्षिण मार्ग,
चंडीगढ़-160020

विषय: हिंदी ई-पत्रिका 'नवकिरण' के 41वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित 'नवकिरण' के 41वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक अहितीय है। श्रीमती पूजा सिंह मंडल का लेख "स्वतंत्रता सेनानियों का हिंदी के प्रति योगदान"; श्री राही दरवेश की कविता "उड़ान" तथा श्री अंकित कुमार ठाकुर का लेख "वृक्ष की महत्ता" अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक व उत्कृष्ट है।

"नवकिरण" निरंतर प्रकाशित होती रहे, पत्रिका की उत्तरोत्तर उन्नति हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संख्या ई.अ./लेप./चंडीगढ़/हिन्दी/2022-23/96
No.
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna - 800 001

दिनांक/Date : 16.03.2023

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय,महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
हरियाणा चंडीगढ़ -160020

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका "नवकिरण" के 41वां अंक का प्रतिभाव ।

महोदय/महोदया ,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 41वां अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई, एतदर्थ आभार एवं धन्यवाद ।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है । पत्रिका के इस अंक में शामिल सभी रचनाएँ उत्कृष्ट है। सभी रचनाकारों को साधुवाद। श्रीमति शिक्षा गुप्ता की रचना "शुभ विचार", तथा श्री अंकित कुमार ठाकुर का लेख "वृक्ष की महत्ता", ज्ञानवर्धक लेख है । श्री कुमार शर्मा 'अनिल' का लेख "मन की बात", एवं सुश्री नीतू सिंह की कविता "मेरी बूढ़ी नानी" विशेष रूप से प्रशंसनीय है । श्री संदीप कुमार मान का लेख "आत्मनिर्भर भारत की दिशाओं में हिन्दी का योगदान" उत्तम है।

हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" कार्यालय की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने में एक सशक्त मंच है । यह इसी प्रकार से राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना योगदान देता रहें, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादकीय मण्डल को पुनः बधाई एवं आभार ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स/Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/Email-agaubihar@cag.gov.in, पो० बॉक्स/P.B. No.-47

प्रतिक्रियाएँ

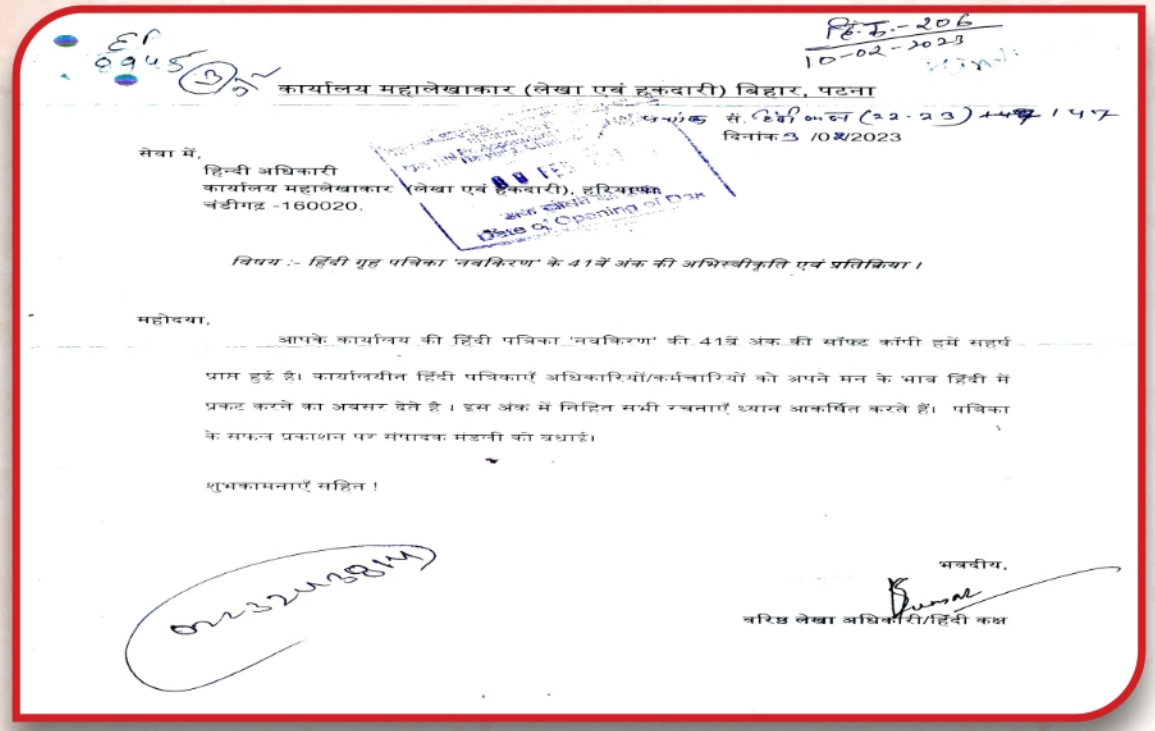

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

क्रमांक सं. हिंदी अनु (22-23) 147
दिनांक 03/03/2023

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा
चंडीगढ़ -160020.

विषय :- हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 41वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' की 41वें अंक की सॉफ्ट कॉपी हमें सहर्ष प्राप्त हुई है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएँ अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने मन के भाव हिंदी में प्रकट करने का अवसर देते है। इस अंक में निहित सभी रचनाएँ ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडली को बधाई।

शुभकामनाएँ सहित !

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी कक्ष

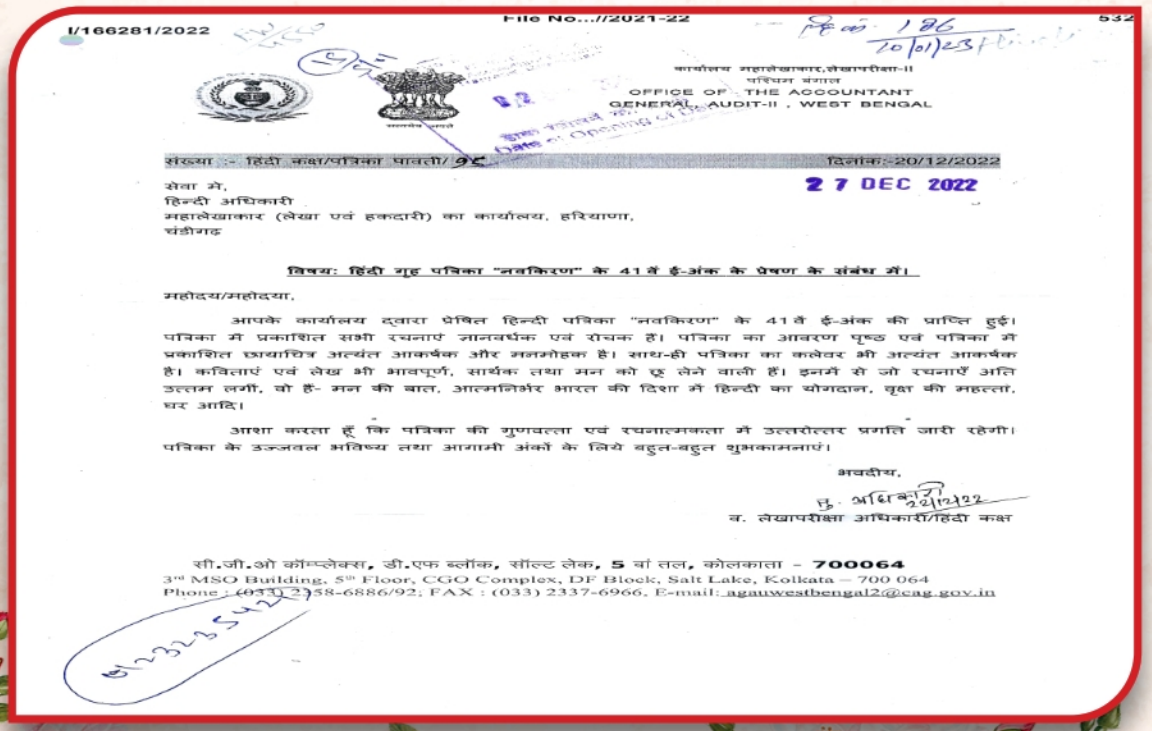

I/166281/2022 File No...//2021-22

कार्यालय महालेखाकार,लेखापरीक्षा-II
पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL AUDIT-II , WEST BENGAL

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 9८ दिनांक:-20/12/2022

27 DEC 2022

सेवा मे,
हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, हरियाणा,
चंडीगढ़

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "नवकिरण" के 41 वें ई-अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 41वें ई-अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी, वो हैं- मन की बात, आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिन्दी का योगदान, वृक्ष की महत्ता, घर आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ ब्लॉक, सॉल्ट लेक, 5 वां तल, कोलकाता - 700064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064
Phone : (033) 2358-6886/92; FAX : (033) 2337-6966, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

प्रतिक्रियाएँ

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central), Chandigarh

पीडीए/राजभाषा/सान्देश/2022-23/270 दिनांक 5/12/22

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी ,
कार्यालय महालेखाकार(लेखा एवं हक),
हरियाणा चंडीगढ़ ।160020

विषयः - वार्षिक हिंदी ई- पत्रिका "नवकिरण" के 41वें अंक का प्रेषण ।

महोदय/महोदया,
आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका"नवकिरण" के 41वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है । रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक- मंडल को हार्दिक बधाई ।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें ।

सधन्यवाद ।

भवदीया,

12222 30804

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

पत्रांक- हिंदी प्रकोष्ठ/ले.प./पत्रिका पावती/2022-23/223 दिनांक- 25.11.2022

27 JAN 2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
हरियाणा, चंडीगढ़

विषय- हिंदी पत्रिका "नवकिरण" की 41वें अंक की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,
आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका **"नवकिरण"** की 41वें अंक की एक प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद! पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही अच्छी है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी प्रकोष्ठ

प्रतिक्रियाएँ

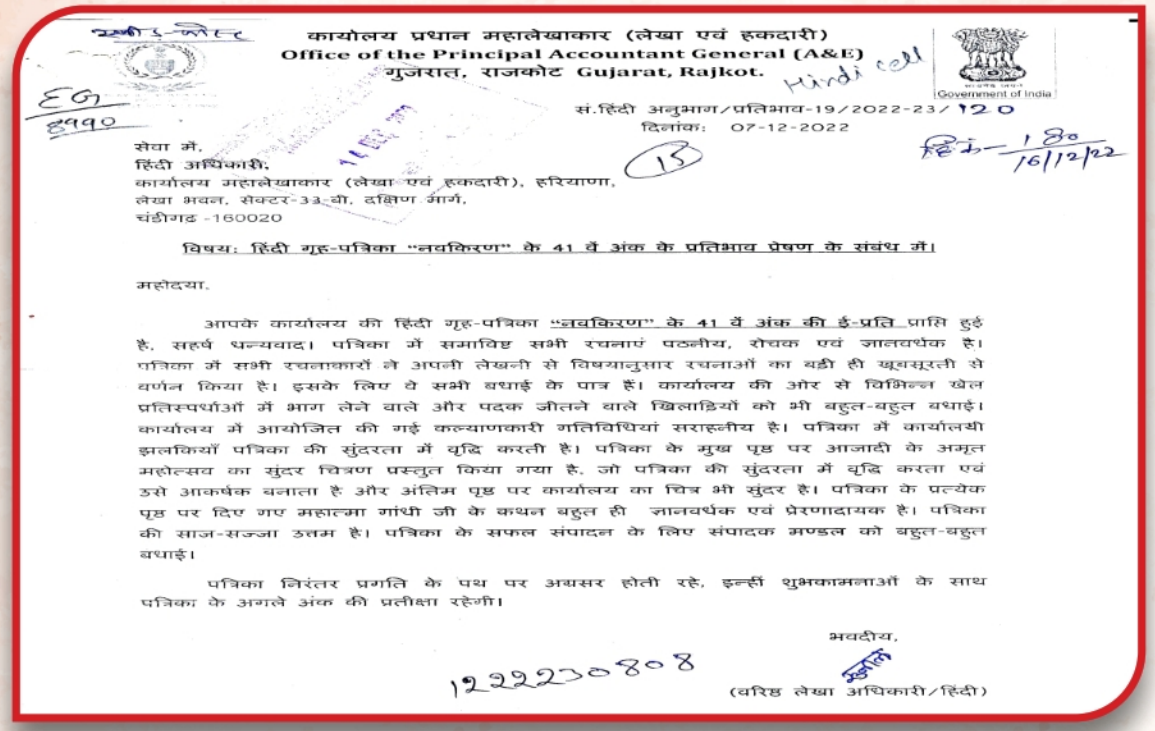

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/120
दिनांक: 07-12-2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा,
लेखा भवन, सेक्टर-33 बी, दक्षिण मार्ग,
चंडीगढ -160020

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "नवकिरण" के 41 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका "नवकिरण" के 41 वें अंक की ई-प्रति प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बडी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। कार्यालय की ओर से विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने वाले और पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को भी बहुत-बहुत बधाई। कार्यालय में आयोजित की गई कल्याणकारी गतिविधियां सराहनीय है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर आजादी के अमृत महोत्सव का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया है, जो पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करता एवं उसे आकर्षक बनाता है और अंतिम पृष्ठ पर कार्यालय का चित्र भी सुंदर है। पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर दिए गए महात्मा गांधी जी के कथन बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी)

अपनी हिंदी भाषा और हमारे हिंदी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023 – 24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं. कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1) हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2) हिंदी मे प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3) हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4) हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5) हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती।	80%	70%	40%
6) हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7) हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8) हिंदी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9) जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10) हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%
11) वेबसाईट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12) नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13) (i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स.	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)

/निदे/सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत) (ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण (iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम) वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	25% (न्यूनतम)
14) राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहाकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
15) कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16) मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	40%	30%	20%
(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों /निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40% ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।			

वक्ताओं की ताकत भाषा, लेखक का अभिमान है भाषा, भाषाओं के शीर्ष पर बैठी मेरी प्यारी हिंदी भाषा।

हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता

पूजा सिंह मंडल

हिंदी भारत की राजभाषा है। 14 सितंबर, 1949 को संवैधानिक रूप से हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान किया गया है कि देवनागरी लिपि के साथ हिंदी भारत की राजभाषा होगी। सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेटे हिंदी अब विश्व में लगातार अपना फैलाव कर रही है। देश-विदेश में इसे जानने-समझने वालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। इंटरनेट के इस युग ने हिंदी को वैश्विक धाक जमाने में नया आसमान दिया है। विश्व में हिंदी भाषी करीब 70 करोड़ लोग हैं। यह तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।

हिंदी जानने, समझने और बोलने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब विश्व भर की वेबसाइट हिंदी को भी महत्व दे रही है। ईमेल, ईकॉमर्स, ईबुक, इंटरनेट, एसएमएस एवं वेब जगत में हिंदी को बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आइबीएम तथा ओरेकल जैसी कंपनियां अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं।

सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट ट्विटर की तर्ज पर हिंदी भाषी लोगों के लिए पुणे के अनुराग गौड़ और उनके साथियों ने मूषक नामक सोशल नेटवर्किंग साइट बनाई है। इसमें ट्विटर की 140 शब्दों की सीमा की अपेक्षा शब्द सीमा पांच सौ है। इसे इंटरनेट पर डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट मूषक डॉट इन पर खोला जा सकता है। साथ ही गूगल प्लेस्टोर से भी डाउनलोड किया जा सकता है। इसमें किसी भी हिंदी शब्द को रोमन में लिखने पर उसका हिंदी विकल्प नीचे आ जाता है। उसे चुनकर हिंदी में लिखा जा सकता है।

विदेश में 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही है। युएई के 'हम एफ-एम' सहित अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डायचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो एवं संयुक्त अरब अमीरात आदि दुनिया के करीब 115 शिक्षण संस्थानों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है। अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है। ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, कैब्रिज यूनिवर्सिटी में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों ने हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। कई संगठन हिंदी का प्रचार करते है। चीन में भी 1942 में हिंदी अध्ययन शुरू हुआ। 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ।

एक अध्ययन के मुताबिक हिंदी सामग्री की खपत करीब 94 फीसद तक बढ़ी है। हर पांच में एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट का प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और वाट्सएप में हिंदी में लिख सकते हैं। इसके लिए गूगल हिंदी इनपुट, लिपिक डॉट इन, जैसे अनेक सॉफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद हैं। हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद भी संभव है।

भले ही आज हिंदी की वैश्विक स्थिति काफि बेहतर है। परंतु विडंबना यह है कि विश्व में अपनी अच्छी स्थिति के बवाजूद हिंदी भाषा अपने ही घर में उपेक्षित जिंदगी जी रही है। जहाँ गुड मॉर्निंग से सूर्योदय और गुड इवनिंग से सूर्यास्त होता है और अंग्रेजी बोलने वालों को तेज तर्रार और बुद्धिमान तथा हिंदी बोलने वालों को अनपढ़ और गंवार माना जाता है। यही कारण है कि हिंदी आज तक हमारी राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई है।

विश्वस्तर पर प्रतिष्ठा पा रही हिंदी को देश में भी सम्मानीय बनाने और अपनाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय अस्मिता एवं अस्तित्व की प्रतीक एवं सांस्कृतिक-राष्ट्रीय स्वाभिमान को एक सूत्र में पिरोने वाली हिंदी की उपेक्षा पर विचार करने की जरूरत है। हिंदी न सिर्फ स्वावलम्बन एवं स्वाभिमान बल्कि आत्मनिर्भरता का भी सशक्त आधार है। यह हमारी भारतीयता का प्रतीक है और हमें इस पर गर्व होना चाहिए।

भारत के गांव की शान है हिंदी,
हिन्दुस्तान की शक्ति हिंदी,
मेरे हिन्द की जान हिंदी,
हर दिन नया वाहन हिंदी।

एक दिन का देशभक्त

आशीष कुमार

15 अगस्त को अचानक एक दिन मैं देश भक्त बन जाता हूँ।
मैं झंडा लहराता हूँ राष्ट्रगान गाता हूँ,
जोर जोर से वन्दे मातरम चिल्लाता हूँ,
देश के लिए मैं ये कर दूंगा, देश के लिए मैं वो कर दूंगा।
लोगों को अपना मैं जोश दिखाता हूँ
उस दिन न हनी सिंह न मुसेवाला मैं सुनता
लता के देशभक्ति नगमे चलाता हूँ
15 अगस्त को अचानक मैं एक दिन देश भक्त बन जाता हूँ।

ये राष्ट्र प्रेम का ढोंग मैं एक दिन दिखाता हूँ,
बाकी दिनों की आज कहानी मैं बताता हूँ
पाइप चला के मैं गाड़ी को धौऊं, AC चला के मैं 16 पे सोऊं,
घर में चाहे मैं बैठा हूँ अकेला, तीनो कमरों में पंखा चलाता हूँ
संसाधनों को मैं अपना न समझूं, बर्बादी के बलि वेदी पर चढ़ाता हूँ
बिजली और पानी की हो जब कटौती
व्यवस्था पे अपनी हताशा दिखाता हूँ
15 अगस्त को अचानक मैं एक दिन देश भक्त बन जाता हूँ।

जन सम्पति को मैं अपना न समझूं, सरकारी समझ के मैं ठोकर लगाता हूँ।
लोगो की नज़रों से खुद को बचा के, मन चाहे जहां कचरा फेक आता हूँ
कूड़े का ढ़ेर जो दिखता कहीं पर, आग लगा के फिर धुआँ उड़ाता हूँ
और दफ्तर में आकर फिर हिंदी पखवाड़े में पर्यावरण पर मैं भाषण सुनाता हूँ
15 अगस्त को अचानक मैं एक दिन देश भक्त बन जाता हूँ।

सिग्नल पे अपनी मैं गाड़ी न रोकूं, टोके अगर कोई उल्टा मैं ठोंकु,
60 की लिमिट हो जिस सड़क पर, 100 की गति में मैं गाड़ी भगाता हूँ,
नो एंट्री में घुसता हूँ, रॉंग साइड जाता हूँ, रोज ऐसा करके मैं जाम लगाता हूँ,
खुलता नहीं अगर जाम वो फिर, ट्रैफिक व्यवस्था पे ऊँगली उठाता हूँ,
15 अगस्त को अचानक मैं एक दिन देश भक्त बन जाता हूँ।

दफ्तर में जाकर मैं भोला बन जाता हूँ, काम न आने के बहाने बनाता हूँ,
अधिकारी न कहदे कोई काम मुझको उससे मैं नॉलेज छुपाता हूँ।
आने में ड्यूटी पे करता हूँ देरी, नौ की जगह साढ़े नौ पे आता हूँ
पर आने में हो चाहे जितनी भी देरी, जाते समय थोड़ा पहले ही जाता हूँ,
15 अगस्त को अचानक एक दिन मैं देश भक्त बन जाता हूँ।

सड़कों पे दिख जाये लड़की जो कोई, आँखों ही आँखों में घर छोड़ आता हूँ
दूसरा गर करता मिले यही हरकत, अपनी बेटी को घर में छुपाता हूँ
बेटों पर अपने लगाता न अंकुश, बिटिया को रोज मर्यादा सिखाता हूँ
15 अगस्त को अचानक एक दिन मैं देश भक्त बन जाता हूँ।

करता मैं हर कोशिश न टैक्स भरने की, अर्थव्यवस्था पे फिर ऊँगली उठाता हूँ
नाइकी के जूते और एप्पल का आइफोन, टाटा को छोड़ मैं ऑडी चलाता हूँ
डॉलर के आगे जब गिरता है रुपया, फिर सरकारों पे अपनी मैं ऊँगली उठाता हूँ
15 अगस्त को अचानक मैं एक दिन देश भक्त बन जाता हूँ।

हिंदी सिर्फ हमारी भाषा नहीं,
हमारी पहचान भी है।
तो आइए हिंदी बोलें,
हिंदी सीखें और हिंदी सिखाएं।

नरेन्दर बौद्ध

जीवन

जीवन एक ऐसी किताब है
हर आदमी के लिए
अलग-अलग इसका सार है।
ऐसी इन किताबों को,
न पढना होता है,
न समझना होता है,
केवल पन्ना पलटना होता है।
तुम नहीं अगर पलटोगे इसे,
ये हवाओं से पलट जाएगा,
हर एक पन्नै पे,
एक नवा मोड़ आएगा,
कभी सुख, कभी दुख,
हैरतअंगेज करतब तुझे दिखाएगा।
तू अगर है सोचता,
समझ गया हूं मैं,
गलतफहमी में है तू नादान,
समय बहुत है अभी,
इसके बचे हुए हिसाब को।
अभी तेरे पन्ने बचे है, कुछ बाकी
समझ तू इस बात को,
जब तू आखरी पन्नै पर जाएगा,
तेरे जीवन का हिसाब-किताब हो जाएगा।
इसके पन्नै सीढ़ियों के जैसे हैं,
छूती ऊँचाई जिसकी आसमान को, के जैसे हैं,

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जानेवाली हिंदी राष्ट्रभाषा, पद की अधिकारिणी है।

इस पर जितना ऊपर तू जायेगा,
नज़र का दायरा तेरा बढ़ता चला जायेगा,
कितना सीमित था तु, समझ तुझे आयेगा
हसीन मंजर देखकर, किसी पाठ का
चाहते हो, यही रुक जाए,
मन भी बहुत करता होगा,
इस पेज पर कोई महकता गुलाब दबाए।
लेकिन वो महकता गुलाब भी,
एक दिन सूख जायेगा।
किसी पेड़ के लिए,
साथ मिलकर पन्नों के,
खाद बन जायेगा।
उसी खाद से नवा पेड़ उगेगा,
नवी किताब बनेगी।
ऐसा नहीं है कि
ये किताब कभी पुरानी नहीं होगी
ऐसा भी नहीं है कि
बरसाते, तूफान, आँधियाँ
इस पर असर नहीं करेंगी
कड़कती आवाज बिजली की
इसमें विरानी नहीं करेंगी
वक़्त के थपेड़े ये भी खायेगी
फिर भी तु निराश न हो,
उदास न हो, आस न खो
बस पलटते हुए पन्नों की,
हवा को महसूस कर!
हवा को महसूस कर!

प्रेम

अंकित कुमार ठाकुर

प्रेम पर लिखना आसान नहीं होता। प्रेम को समझाना भी आसान नहीं होता। प्रेम पर सबकी अपनी अपनी परिभाषा होती है, अनुभव होते हैं और व्यक्गित अभिव्यक्ति होती है। कोई दुःख में लिखता है, कोई सुख में, कोई गुस्से में, कोई ईर्ष्या में, कोई विरह में, कोई सुकून में तो कोई बेचैनी में।

कोई सही नहीं है, कोई गलत नहीं है। शायद आज तक कोई प्रेम समझकर लिख नहीं पाया है या हर कोई लिख गया है किसे पता? किसी का लिखा हुआ अगर आपके दिल को छूता है, तो मेरे हिसाब से प्रेम की सबसे सुंदर व्याख्या वही है।

प्रेम कभी शब्दों का मोहताज नहीं होता और न ही वादों का। लेकिन जब भरोसा होता है तभी प्रेम होता है और ये भरोसा, इस भरोसे की जो दहलीज होती है ना वो वादों पर ही टिकी होती है, जो कभी कहे नहीं जाते। बस हुआ करते हैं।

मैं ऐसा मानता हूँ कि प्रेम की परिभाषा अब बदल सी गयी है। नहीं-नहीं माफी चाहूँगा मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए। मुझे ऐसा इसलिए नहीं कहना चाहिए क्योंकि देखा जाये तो प्रेम की कोई परिभाषा ही नहीं है। परन्तु ऐसा जरुर कह सकते हैं की अब हमने प्रेम की एक अलग ही परिभाषा बना ली है। प्रेम की परिभाषा कैसे बदल सकती है।

कहते हैं कि जब किसी के गुण उससे छीने न जा सके, प्रेम जब वहाँ से शुरू होता है तो वही प्रेम की सबसे सच्ची परिभाषा होती है। वही उसका मूल रूप होता है। प्रेम यदि गुण से होकर आये, भीतर से बाहर की तरफ आये तो वो प्रेम ही स्थायी रहता है, क्योंकि गुण समय के साथ निखरते हैं। और इस संसार में बिना निखार यानि परिवर्तन के कोई भी चीज स्थायी नहीं रह सकती या उसमें समय के साथ निखार ना हो। क्योंकि परिवर्तन तो संसार का एक अटूट नियम है और यह उतना ही जरुरी है जितना कि शायद साँस के लिए शुद्ध वायु।

प्रेम भी हमें संघर्ष में ही पहचान आता है। तभी तो कोई प्रेम को आकर्षण कहता है तो कोई उसे बस आसक्ति परन्तु देखा जाये तो वास्तविकता कुछ और ही होती है। भगवान् श्री कृष्ण भगवद्गीता में कहते हैं- इस संसार में उन्होंने आकर्षण के लिए चार चीजें दी है। पहला कला, फिर विद्वता उसके बाद धन और आखिर में रूप-सौदर्य। मतलब कला, विद्वता, धन और सौंदर्य यानि रूप। जब प्रेम इस क्रम में होता है, तो वो स्थायी होता है, वो हिमालय जैसा अटूट होता है, गंगा जैसा पवित्र होता है। परन्तु बात तब बिगड़ती है, जब यह क्रम ही उल्टा हो जाये।

पहले प्रेम में प्रेम का इतना जुड़ाव होता था, प्रेम के लिए इतना प्रेम होता था, इतनी सत्यता होती थी, इतनी निष्ठा होती थी, इतनी सरल और इतनी निच्छल हुआ करती थी कि कितनी भी मुश्किल आ जाये, कितनी भी-कितनी भी अड़चन आ जाये यह प्रेम का बंधन कभी टूटता नहीं था। वास्तव में, प्रेम का बंधन ऐसा बंधन होता था, ऐसी सीमा होती थी कि उसमें ब्रहमाण्ड भर की आजादी होती थी। लेकिन, आज वही प्रेम थोड़ी सी मुश्किलें वहन नहीं कर सकता। आज प्रेम थोड़ी सी भी परेशानी सहन नहीं कर सकता है। आज प्रेम को सब तैयार चाहिए, उसे सब रेडिमेड चाहिए होता है। जब सब कुछ अच्छा होता है तभी, बस तभी प्रेम होता है। यही कारण है कि आजकल का प्रेम बस क्षणभंगुर है या कहें की इसे बना दी गयी है। जब हम संघर्ष में रहते है, जब हमें प्रेम की सबसे ज्यादा जरूरत महसूस होती है तब यह हमसे उतना ही दूर हो गया रहता है जितना कभी करीब हुआ करता।

अगर देखा जाये तो हम सब दुनियां में औसतन मात्र 60 से 70 आयु वर्ष के लिए हैं, हम में से कोई भी यहाँ हमेशा नहीं रहने वाला है। तो क्यों ना दिल के काम सच्चाई से करें, क्यों ना किसी का हाथ ही थामें तो पूरी सच्चाई से थामा जाये। जिसमें सत्यता, ईमानदारी, निष्ठता और सबसे अहम प्रेमत्व अपने पराकाष्ठा पर हो। जहाँ जीवन के हर लक्ष्य में प्रेम का बस हो। जीवन के हर क्रिया-कलाप में प्रेम चर्मोत्कर्ष पर विराजित हों। क्यों ना खुशियाँ चीजों के बजाय दिलों में खोजी जाये। क्यों ना दुनियां की झूठी चमक-धमक की जगह वास्तविकता, यथार्थता को ढूंढा जाये। बाकि समय तो गुजर ही रहा है गुजरता भी रहेगा और हमें एक जगह अलविदा भी कहेगा और हमें वो स्वीकार भी करना होगा। स्वीकार करना ही पड़ेगा क्योंकि मना करने का कोई विकल्प जो नहीं है हमारे पास उसके फैसले पर।

कहते हैं कि जब हम सयाने हो जाते हैं तब हमारे सच्चाई भरे पल ही हमें सुकून देते हैं। इतना सुकून की हम सब फिर से सब भूल कर पुनः उर्जावान हो जाते हैं। हम स्वतः आशावान हो जाते हैं।

तो क्यों ना वास्तविक प्रेम को ही ढूंढा जाये या जो मिल गया उसे ही वास्तविक प्रेम बनाया जाये ऐसा इसलिए भी क्योंकि मेरे हिसाब से प्रेम करना 'माटी पर माटी' लिखने जितना आसान है परन्तु निभाना 'पानी पर पानी' लिखने जितना मुश्किल। हांलाकि यह असंभव नहीं है बस जरुरत है तो गहराइयों में शिद्दत से उतरने की।

सारे देश की आशा है,
हिन्दी अपनी भाषा है,
जात-पात के बंधन को तोड़ें
हिन्दी सारे देश को जोड़े।

कुछ पल ठहर तो सही

पंकज अरोडा

कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
उड़ते पंछी से कहा,
कुछ पल ठहर तो सही।
कितना सफर तय किया,
जान तो सही।
क्या भूला, क्या छूटा,
जान तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
बहती नदी से कहा,
कुछ पल ठहर तो सही।
बर्फ, पहाड, जंगल छूटे,
जान तो सही।
गांव खलिहान छूटा,
जान तो सही।
शहर घाट छूटा,
जान तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
भागती जिंदगी से पूछा,
कुछ पल ठहर तो सही।
रिश्ते छूटे, रिश्ते टूटे,
जान तो सही।
माता-पिता का लाड छूटा,
भाई-बहन का प्यार छूटा।

कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
शहर छूटा, दोस्त रूठे,
सखी सलोनी का बंधन टूटा।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
रिमझिम बरसात की,
मस्ती भूली।
बहती नाव भी कहीं,
गुम हो ली।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
गुरू की डाँट छूटी,
डंडे की मार छूटी।
किताबों का बस्ता छूटा,
मस्ती का मैदान छूटा।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
आम की बोर,
कोयल की कूक।
खेत के ईख, खाना छूटा,
मस्ती का आलम रूठा।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
जीवन की दौड़ ने,
नए शहर में पटका।

काम धंधे ने जीवन को,
दौड़ना सिखलाया।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
नई-नवेली दुल्हन का थामा हाथ,
फिर हो लिया बच्चों का
कारवां साथ।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
आचानक जिंदगी को,
यूँ लगा झटका।
फिर बदन,
क्यूँ अकड़ा।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
बच्चे से बुढापे का सफर,
क्या छूटा, क्या पकड़ा?
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
अपना-अपना करता जीवन,
अब तो लो कुछ सब्र।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
धरती समाज को,
कुछ देकर जाएं।
कहीं समय की डोर,
हाथ से छूट न जाए।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।
आज लें कुछ प्रण-स्वयं से,
करे वादा, बिना भूल।
उस समाज को,
जिसने दिया सब कुछ,
दो उसे अब तुम भी कुछ।
कुछ पल ठहर तो सही।
कुछ पल ठहर तो सही।

है ये वतन हमारा हिंदी,
हिंदुस्तान इसे हम कहते हैं,
राष्ट्रभाषा है अपनी हिंदी,
मातृभाषा इसे हम कहते हैं।

बेरोजगार और कुंवारा

आशीष कुमार

राम एक मेधावी छात्र था, बचपन से ही बहुत मेहनती था। उसका एक मात्र सपना था कि सरकारी नौकरी करे। समाज में एक अच्छा जीवन स्तर बनाकर जीवन व्यतीत करे।

वह इसके लिए बड़ी मेहनत करता। जब कोई विभाग भर्ती निकालता वह सारे फॉर्म भरता, परीक्षा देता कभी एक या दो नम्बर से रह जाता। परन्तु उसने कोशिश नहीं हारी। एक दो जगह सिलेक्शन हुआ भी पर कभी कोई नौकरी नहीं मिली जो उसके लक्ष्य के अनुसार हो। जब कई दिनों तक कोई नौकरी नहीं मिली तब घरवालों ने टोकना शुरू कर दिया कि सरकारी नौकरी न सही प्राइवेट ही कर लो कहीं ऐसा न हो की ज्यादा उम्र हो जाये और हर नौकरी के लिए उम्र निकल जाये।

अंततः उसे महालेखाकार कार्यालय में लेखाकार के रूप से चयनित किया गया। उसकी खुशी का ठिकाना ही न रहा ऐसा लग रहा था कि जीवन का सर्वोच्च आनंद प्राप्त कर लिया हो। एक बेरोजगार इन्सान को यदि सरकारी नौकरी मिल जाये तो उसे ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग का खजाना मिल गया हो। नियुक्ति पत्र हाथ में आते ही वह ऐसे घूमता है जैसे उससे ज्यादा भाग्यशाली कोई और है ही नहीं।

आखिरकार उसने कार्यलय ज्वाईन कर लिया। कार्यालय में प्रवेश करते समय ऐसा महसूस कर रहा था कि जैसे कहीं का राजा हो। पहले दिन

शाम एक छोटे से शहर का साधारण युवक था। शरीर से हट्टा-कट्टा तथा स्वभाव से दिलफेक। इसके दिल में बस एक ही इच्छा थी कि कोई सपनों की राजकुमारी उसकी जिन्दगी में आये और उसके साथ विवाह करके वह अपनी जिन्दगी खुशी-खुशी गुजारे।

अपने सपनों की राजकुमारी को ढूंढने के लिए अथक प्रयास करता। क्या फेसबुक क्या इन्स्टाग्राम जहाँ देखो वहीं अपने जीवन साथी को तलाशता रहता। परन्तु अभी तक ऐसी कोई मिली नहीं जो इसके सपनों पर खरी उतरती हो। जब उमर बढ चली तो घरवालों ने टोकना शुरू कर दिया कि कहीं रिश्तेदारों की पसंद से कोई लड़की देखकर शादी कर लो कहीं ऐसा न हो कि ज्यादा उम्र हो जाये और कोई रिश्ता ही न आये।

जब कहीं दाल नहीं गली तो घरवालों ने एक सुंदर सी लड़की देखकर उसकी शादी तय कर दी। एक ऐसा लड़का, जिसे आजतक किसी लड़की ने कोई भाव न दिया हो यदि उसे कोई सुंदर लड़की जीवन साथी के रूप में मिल जाये ऐसा लगता है कि दुनिया का सबसे खुशनसीब इन्सान वही है। मंगेतर की फोटो जेब में रखकर ऐसे घूमता था जैसे कोई स्वर्ग की अप्सरा मिल गई हो।

अतः वह शादी का दिन आ ही गया। कहते है न की शादी वाले दिन दुल्हे से राजकुमार की तरह व्यवहार किया जाता है सारे रिश्तेदार उसके

कोई काम तो नहीं मिला अतः पूरा दिन आनंद और मस्ती में गुजर गया। चूंकी अभी किसी सेक्शन में तैनाती नहीं मिली थी अतः हाजिरी ट्रांजिट रजिस्टर में लग रही थी तो आने वाले कुछ दिन तक यूँ ही आराम वाले दिन गुजर गये।

फिर एक दिन एक अनुभाग में उसकी तैनाती हो गई। सीट की जिम्मेदारी आते ही समझ आ गया की मस्ती से काम नहीं चलेगा। अब काम करना पड़ेगा। वह पूरा दिन सीट से हिलता नहीं था, पर काम खत्म होने का नाम ही नहीं लेता था। पूरा दिन अनुभाग अधिकारी की चिक चिक। वह चाहे जितना मर्जी काम करले अधिकारी खुश नहीं होते थे। कई बार अनुभाग अधिकारी तथा शाखा अधिकारी के बीच मतभेद होने पर भी वही बीच में पिसता था। एक को खुश करे तो दूसरा नाराज। इस तरह की समस्याओं से आये दिन उसका सामना होता। पर वो कर भी क्या सकता था अब यही जीवन था।

धीरे-धीरे दिन बीतने लगे, कभी अधिकारियों द्वारा मीमो मिलना, कभी ससपेंशन की धमकी, कभी लेट आने पर वेतन विहीन छुट्टी की धमकी, ये रोज का काम हो चुका था जिस नौकरी के लिए कभी इतने सपने देखे थे वह अब उसे सताने लगी थी।

कुछ दिन बाद उसके मन में आया के इस पोस्ट पर अब और सहन नहीं होता तृतीय श्रेणी के कर्मचारी को हर जगह दबाया जाता है एक बार SAS कर लूँ फिर चैन से बैठ कर नौकरी करूँगा औरों पर हुकुम चलाया करूँगा।

फिर क्या था जोर शोर से परीक्षा की तैयारी करनी शुरू कर दी। किताबों, कोचिंग क्लास पर काफी खर्च किया दो-तीन प्रयासों के पश्चात् सफलता प्राप्त कर ली। परिणाम वाले दिन बधाई देने वाली को तांता लगा था। आने वाले कुछ दिन तक काफी अच्छा महसूस किया।

आवभगत में लगे थे तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे वो कहीं का राजा हो। दुल्हन को लेकर घर आने के बाद कुछ दिन बड़े आराम से गुजरे। घरवाले भी किसी काम को नहीं कह रहे थे सोच रहे थे की नयी नयी शादी हुई है, आनंद उठाने दो।

शादी के कुछ दिन बीतने के पश्चात् लगने लगा की खर्चे बढ़ गए है। अब पहले से ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। शाम को काम से थक हारकर जब घर पहुंचता तो बीवी की समस्याएं सुनने को मिलती, ''आज घर में गैस खत्म हो गई, बिजली का बिल भी आ गया है, मुझे भाई की शादी में जाने के लिए नयी साड़ी चाहिए।'' इस तरह की समस्याओं से आये दिन उसका सामना होता। पत्नी की ख्वाहिशें पूरी ही नहीं होती थी। दूसरा एक नयी समस्या, मां और बीवी के बीच में सामंजस्य बैठाना। दोनों की अपनी शिकायते थीं,

उनको सुनता तो ऐसा लगता की दोनों अपनी जगह सही है पर इसमें बेचारा वो बीच में पिसता। एक की सुनने का मतलब था दूसरे को नाराज करना। जबकि रहना दोनों के साथ ही था। बेचारा किसी तरह दोनों को शांत करता।

शादी को दो वर्ष बीत चुके थे अब उसकी जान को रोज कोई न कोई क्लेश होता कभी बीवी के ताने कभी मायके जाने की धमकी, कभी ससुराल वालों की धमकी 'अगर हमारी बेटी को कोई तकलीफ हुई तो देख लेना। दहेज केस में अन्दर डलवा देंगे।'

कुछ दिन बाद उसने सोचा एक बच्चा हो जाये तो पत्नी को कुछ समझ आएगी वो इस घर को अपना घर समझेगी। वो बच्चे में व्यस्त रहेगी तो मेरी कुछ परेशानी तो कम हो जाएगी। फिर एक तनावमुक्त जीवन जीऊंगा।

अब उसे एक अनुभाग का अधिकारी बना दिया गया कुल 5 कर्मचारी उसके अधीन कार्यरत थे। लेकिन कहते है न की बड़े पद के साथ जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। अब उसके अनुभाग में कोई काम होता शीर्ष अधिकारी उससे ही जवाब मांगते। वो दोनों तरफ से पिस रहा था। कर्मचारी किसी भी फाइल को उल्टा सीधा काम करके उसके आगे रख देते फिर आगे वह उसको ठीक करता रहता और सारा दिन परेशान रहता।

वक्त गुजरा, धीरे-धीरे वेतन बढ़ता रहा, अनुभाग अधिकारी से शाखा अधिकारी बना, पर अब उसे कोई खुशी महसूस नहीं होती थी। चाहे जितना पैसा हो गया हो उसके पास, कोई फर्क नहीं पड़ता था उसको। सारा दिन ऑफिस की टेंशन, फिर शरीर की बिमारियां जिन्दगी जैसे किसी तरह काट रहा था।

फिर एक वह दिन भी आया जिसकी तिथि नौकरी में आते ही निश्चित हो जाती है सेवा निवृति। जीवन के कई अनमोल वर्ष लगाकर वह आज घर पर ऑफिस से हमेशा के लिए लौट कर आ गया। रात को सोने के लिए वह छत पर चला गया। ऊपर आकाश के तारों को देख कर वह सोच रहा था कि वही वापस आ गया जहाँ से शुरू किया था।

पत्नी के गर्भ धारण के दौरान पत्नी का रूटीन चेकअप, दवाईयों का काफी खर्च हुआ। फिर एक दिन एक बच्ची का जन्म हुआ। परिवार में खुशियों की लहर दौड़ गई। लक्ष्मी का जन्म हुआ है ऐसा कहकर हर कोई बधाई देता। अब वह काफी खुश था।

अब वह घर का मुखिया बन चुका था घर की सारी जिम्मेदारी उस पर थी किसी का लेन देन, परिवार में शादी ब्याह आदि हर जगह वही आगे रहता। बच्चों की पढ़ाई, परिवार के इलाज खर्च, मेहमानों का आना जाना इसी सब में उलझ कर रह गया था उसका जीवन। पत्नी बच्चों का क्या था। उन्हें तो बस फरमाइश करनी होती आगे बेचारा परिवार का मुखिया जाने।

वक्त के साथ बच्चे बड़े हो गये, एक एक करके सबकी शादी हो गई। लड़कियां अपने घर चली गई, लड़के काम के लिए बाहर जाकर रहने लगे। इतने बड़े घर में बस दोनों पति पत्नी रह गये थे। हाँलाकि पैसे की कोई कमी नहीं थी बाहर से बच्चे बहुत पैसा भेजते थे पर वो अब उसे कोई खुशी नहीं देते थे।

कहते है कि जीवन में जो मिलता है वह छोड़कर भी अवश्य जाता है। एक दिन पत्नी भी बीमारी के कारण हमेशा के लिए छोड़कर चली गई। संस्कार इत्यादि हो गया सब रिश्तेदार अपने घर चले गए। बच्चे कुछ दिन साथ रहे फिर वो भी अपने घरों को चल दिए। आज वो घर में अकेला ऊपर आकाश की तरफ निहार रहा था कि इतना सब होने के बाद फिर वहीं आ गया।

''जीवन का सारांश''

दोनों ही अपने-अपने घरों में बैठकर सोच रहे थे क्या यही सब था जिसके लिए मैंने कभी सपने देखे थे। बस यही था इसमें तो मैं खुश होने की बजाय परेशान ज्यादा रहा।

कभी-कभी हम सभी यह सोचते हैं ये हो जाये तो पता नहीं कितनी खुशी मिलेगी, पर जब हम उस मुकाम पर पहुंचते है तो पता चलता है ये डगर तो परेशानियों से भरी पड़ी है। और इच्छाओं का क्या है ये बड़ी बेवफा होती है जैसे ही पूरा होती है बदल जाती हैं।

रविन्द्र कुमार

कविता

ज़िन्दगी के समंदर में इंसान एक नौका है
कर मदद किसी की अरे यही तो मौका है
जो है अपना वही सब है प्यारे
दूसरे की थाली का बड़ा लड्डू आँखों का धोखा है
दूसरों को सेवा करते हुए देख ही मत तू
उठ, जाग, भाग दोस्त तुझे किसने रोका है
कट जाएगा ये क्रूर वक्त भी एक दिन
ये ज़िन्दगी तो बस सुख-दुःख का झरोखा है
मेरा मकां तेरे छोटे मकां से ज्यादा आलिशान है
इंसानियत के क़त्ल का ये अंदाज़ अनोखा है

देश तथा जाति का उपकार
उसके बालक तभी कर सकते हैं।
जब उन्हें उनकी भाषा द्वारा शिक्षा
मिली हो।

एक सप्ताह

संदीप कुमार मान

सात दिनों का गीत सुनाएं,
आओ तुम्हें चण्डीगढ़ की सैर कराएं।
सोमवार हम गए सुखना झील पर,
वहां कौवा बैठा था चील पर।
मंगलवार को राक गार्डन आए,
वहां कठपुतलियों संग हम नाचे गाए।
बुधवार को पहुंचे जाकिर हुसैन बाग,
जहां खिले हैं 825 तरह के गुलाब।
वीरवार छतबीर चिड़ियाघर में बीता,
जहां हाथी देखा चाय पीता।
शुक्रवार को गए देवी मंदिर माता मनसा,
बोझ हल्का हो गया वहां मन का।
शनिवार को गए बर्ड पार्क,
वहां पक्षियों संग की खूब शरारत।
रविवार को देखा गुरुद्वारा चौक का नजारा,
प्रधान महालेखाकार कार्यालय है जहां सबसे प्यारा।

हिंदी थी वो जो लोगों के दिलों में उमंग भरा करती थी
हिंदी थी वह भाषा जो लोगों के दिलों में बसा करती थी,
हिंदी को ना जाने क्या हुआ, रहने लगी हैरान परेशान
पूछा तो कहती है, अब कहाँ है मेरा पहले सा सम्मान।

आज फर्ज़ का इम्तिहान

जोगिन्द्र सिंह यादव (2690572)
18 ग्रेनेडियर परमवीर चक्र 1999

विक्रम सिंह

एक था माँ भारती का सपूत
नाम था जोगिन्द्र
सिंह सा था जिसका स्वरूप।
जान की लगाकर जिसने बाजी
जीती टाइगर हिल फौलादी।
आगे बढ़ता गया जी न भरा जब तक
जीती न माँ भारती की धरती तब तक।
खुद को बनाकर ढाल, साथियों को किया निहाल
आगे बढ़ता गया, जो न रूका देखकर भी ढाल।
दुश्मन की गोली पर था उसका नाम
पर उसकी गोली पर था दुश्मन का निशान।
रास्ता था पथरीला बर्फ से ढका, न था सुकून
पर बर्फ क्या आज रूकेगी ना प्लाटून
क्योंकि आज था टाइगर हिल जीतने का जुनून।
दिन था या रात, बर्फ और बारिश का साथ
ऐसा था समा, मानो पुष्प और सुमन थे हमारे साथ।
दुश्मन ने तो दिए गोली-बारूद एक साथ
और हमने खो दिए तीन हीरे साथ-साथ
दिल तो दुखा दर्द भी हुआ पर न रूकेगें
यह सोचकर तो आगे बढ़ेगें।
रोक सकेगा न आज कोई ये हमारा रण मंत्र
छिन लेगें धरती अपनी तोड़ तुम्हारा तंत्र।
स्वचालित मशीन दुश्मनी, दागे गोलियाँ अनगिनत
पहले उसे ही रूकना होगा, करना पडेगा इसे विसर्जित।
कितनी लगी गोलियाँ न की गिनती न कोई सबूत
दर्ज होगा इतिहास में बताएगा वर्तमान और भूत

आज हमारी आन और बान बनेगी
टाइगर हिल देश की शान बनेगी।
देकर प्राणों की बाजी
खेली हमने यह होली
स्वाह किया दुश्मन
बनाई रंगोली।
इस रंगोली के हम रंग और खिलौने
सजाया और दोहराया हमने इतिहास
जीत टाइगर हिल जिताया कारगिल।
न जताया न बताया पर दिया फर्ज़ का इम्तिहान
ऐसा है मेरा भारत महान।
एक के आगे एक बढ़ेगें
ले लेंगे प्राण
दुश्मन न भूल पाऐगा
न भूलेगा कोई ये इम्तिहान
ऐसा सिखा और सिखाया
जोगिन्द्र जैसा वीर न पाया
सुजल क्या सारा देश देगा इम्तिहान
ऐसा मेरा भारत महान।

जब हम अपना जीवन जननी हिंदी,
मातृभाषा हिंदी के लिए समर्पण कर दें
तब हम हिंदी के प्रेमी कहे जा सकते हैं।

मायका

लोकेश

मायका जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है मां से मायका होता है। लड़की जब तक अपनी मां की छाया में रहती है तब तक उसे किसी बात की फ्रिक नहीं होती। क्योंकि उसे कोई रोकने-टोकने वाला नहीं होता और ना ही घर के कार्यों का बोझ उस पर डाला जाता है। मायके से मुझे एक लड़की की आपबीती याद आ गई। यह घटना मेरे सामने घटित हुई है। इसमें एक लड़की मध्यवर्गीय परिवार से संबध रखती थी। उसके परिवार में उसके माता-पिता थे। पिता एक सरकारी कर्मचारी थे, जो अब रिटायर हो गए थे। घर परिवार में लड़की के दो भाई-भाभियां थी। पिता जी की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह ऑटो चलाते थे। दोनों भाईयों की शादी हो गई थी। बड़े भाई के दो लड़के थे और छोटे के एक लड़की थी। घर का बड़ा लड़का शादी के कुछ साल बाद परिवार से अलग हो गया। जिस कारण घर की सारी जिम्मेवारी उस लड़की पर आ गई। छोटा भाई बीमार रहता था और पिता जी बुर्जुग थे। लड़की प्राइवेट जॉब कर के घर का गुजारा चलाती थी। लड़की की भी शादी की ऊम्र हो गई थी। मां-बाप भी चिंतिति रहते थे। किसी तरह उसके माता-पिता ने कर्जा लेकर लड़की की शादी की। शादी के बाद लड़की का शादीशुदा जीवन अच्छे से बीत रहा था। उधर लड़की के मायके में उसके पिता ऑटो चलाकर घर का गुजारा करते थे। कुछ समय पश्चात उनका बड़ा लड़का और वह वापस घर आ गए और उन्होंने घर की जिम्मेदारी उठा ली। अब मायके में भी समय अच्छे से बीत रहा था। लड़की भी अब चिंता से मुक्त थी, क्योंकि उसके दोनों भाई घर की जिम्मेदारी अच्छे से निभा रहे थे। लड़की सोचती है अब कुछ दिन मायके हो आए। मायके में आती है, इधर उसकी मां उसका पूरा ख्याल रखती थी। उसकी मां उसको आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है, जिसे देख उसकी दोनों भाभियां चिढ़ती थी। कुछ दिन बाद लड़की अपने ससुराल वापस आ जाती है। कुछ महीनों बाद लड़की की मां की तबीयत खराब हो जाती है। उस समय कोरोना काल था। कोरोना के कारण लोग घर से बाहर निकलने को डरते थे। अस्पताल भी नहीं जा पाते थे। मां की तबीयत खराब हो गई। लड़की भागी हुई अपने मायके आती है। अपनी मां को अस्पताल लेकर जाती है। उसकी भाभियों ने भी उससे बोलचाल बंद कर दी। लड़की माँ के देहांत के बाद बहुत दुःखी रहती थी। लेकिन लड़की का पति उसे कभी दुःखी नहीं होने देता, उसको कभी उसके मां की कमी नहीं होने देता। उसको हमेशा खुश रखता। लड़की को ससुराल की तरफ से हमेशा खुश रखा जाता। अंत में यही कहना चाहता हूं मायका मां से होता है और मां पर ही खत्म हो जाता है। मां जैसा प्यार कोई नहीं दे पाता। मां से ही मायका होता है, आज पता चल गया।

वह कौन है?

राज कुमार

देखा नहीं था जिसने मुझको, ना बात हुई कुछ बोल कर।
जो संग मेरे आ गई है, अपना सब कुछ छोड़ कर।।

वह कौन है, वह कौन है?

हर रिश्ता नाता जिसने समझा, दो घरों की शान है।
लाडली थी जो पिता की, अब मेरी पहचान है।।

वह कौन है, वह कौन है?

कभी-कभी चेहरे पर गुस्सा, मन में जिसके प्यार है।
सात फेरों से जिसने मुझको, माना अपना संसार है।।

वह कौन है, वह कौन है?

ख्वाब देखा था जिसने कभी, आसमान छूने का।
मेरे लिए जमीन पर है, अपनी उड़ान छोड़ कर।।

वह कौन है, वह कौन है?

मेरे सपनों को अपना बना लिया, जिसने अपने सपने तोड़कर।
जो चलती है साथ मेरे, कदमों से कदमों को जोड़कर।।

वह कौन है, वह कौन है?

साथ छोड़ा जो उसने मेरा, टूट कर बिखर जाऊंगा मैं।
अब तक समेटे जिसने रखा, जो मेरा विश्वास है।।

वह कौन है, वह कौन है?

हर्ष-युग को पाला जिसने, राज को संभाला जिसने।
सुख-दुख में जो साथ निभाती, मेरे घर को स्वर्ग बनाती।।

वह कौन है, वह कौन है?

छोड़ चला माँ मैं

विक्रम सिंह

[शहीद भगत सिंह की माँ विद्यावती भगत सिंह से पूछना चाहती है कि वह उसे बुढापे में क्यों छोड़ कर चला गया और भगत सिंह इसका क्या जवाब देता है?]

ऐ मेरे भगत सिंह, उतार कर्ज भारत माँ का
लिए अधूरा सपना आँखो में
चला गया छोड़ हमको भर आसूँ आँखो में।

कौन आएगा सपने मेरे पूरे करने
कौन आएगा सपने तेरे पूरे करने
कौन बनेगा मेरा सहारा
भरी जवानी 23 की तू छोड़ चला।

जलाकर ज्वाला आजादी की
जलाकर ज्वाला अंग्रेजो की बर्बादी की
तू छोड़ चला।

ऐसा मैं करके चला
याद करेगा भारत मुझको
याद करेगा माँ, भारत तुझको।

ऐसा क्या सिखाया तुमने
ऐसा क्या खिलाया तुमने
रोम-रोम में भरकर सपना आजादी का
मैं छोड़ चला।

कौन तेरा बनेगा सहारा
कौन तेरा बनेगा किनारा
खेवट तेरी नैय्या का माँ मैं
दीपक तेरी आँखो का माँ, मैं छोड़ चला
ज्वाला तेरे सपनों का माँ, मैं छोड़ चला।

धन्य हुई मैं, माँ बनके तेरी,
तुझको फिर से पाने की
तुझको फिर से अपनाने की
आकर गोद में खिलकर मेरी
अभिलाषा मेरी करना पूरी।

विविधताओं से भरे इस देश में लगी
भाषाओं की फुलवारी है,
इनमें हमको सबसे प्यारी हिंदी
मातृभाषा हमारी है।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा-2022 का प्रतिवेदन

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, चंडीगढ़ में दिनांक 14-29 सितंबर, 2022, तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वाधान में इस वर्ष हिंदी दिवस का शुभारंभ/उद्घाटन समारोह दिनांक 14-15 सितंबर, 2022 तक सूरत (गुजरात) में एकत्रित रूप से सभी विभागों/कार्यालयों द्वारा किया गया। हिंदी पखवाड़ा-2022 के दौरान दिनांक 19-09-2022 से 28-09-2022 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा दिनांक 29-09-2022 को हिंदी पखवाड़ा 2022 का समापन समारोह आयोजित किया गया। सुश्री नाजली जाफरी शाईन, महालेखाकार महोदया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री प्रवीण कुमार मौर्य, उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदय ने महालेखाकार महोदया एवं वहां उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। वरि. लेखा अधिकारी ने माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का सन्देश पढ़कर सुनाया, साथ ही 14-15 सितंबर, 2022 को सूरत (गुजरात) में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान माननीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा दिए गये रेकॉर्डेड भाषण का प्रसारण प्रस्तुत किया गया।

समारोह में राजभाषा नीति के अनुसार वर्ष 2021-2022 के दौरान सरकारी कामकाज में 20000 से अधिक हिंदी के शब्दों का प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को महालेखाकार महोदया द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान किये गये तथा उन्हें प्रमाण-पत्र देकर भी सम्मानित किया गया। महालेखाकार महोदया द्वारा कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''नवकिरण'' के श्रेष्ठ तीन रचनाकारों को भी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे- निबंध, भाषण, आलेखन/टिप्पण एवं अनुवाद, हिंदी शब्द ज्ञान, श्रुत लेखन, कंप्यूटर टाइपिंग एवं कविता पाठ आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करवाया गया तथा प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को भी महालेखाकार महोदया एवं उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदय के कर-कमलों द्वारा नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा के समापन समारोह के दौरान महालेखाकार महोदया द्वारा कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''नवकिरण'' के 41वें अंक का भी विमोचन किया गया। इसके पश्चात् महालेखाकार महोदया ने अपने संबोधन में कार्यालय के सभी कार्मिकों को कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करने का सन्देश दिया। समारोह के अंत में, सुश्री पूजा सिंह मंडल, हिंदी अधिकारी ने महालेखाकार महोदया, उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदय एवं अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का धन्यवाद किया।

सेवानिवृति सूची

01-04-2022 से सेवानिवृत हुए अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	राम चरण	सहायक पर्यवेक्षक	30-04-2022
2.	सुभाष चंद	पर्यवेक्षक	30-04-2022
3.	विजय कुमार गर्ग	सहायक लेखा अधिकारी	30-04-2022
4.	संगीता खरबंदा	पर्यवेक्षक	30-04-2022
5.	जतिंदर कुमार तलवार	निजी सचिव	30-05-2022
6.	धीरेंदर सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	30-06-2022
7.	नरेंद्र कुमार खन्ना	पर्यवेक्षक	30-06-2022
8.	अनीता शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी	30-06-2022
9.	ओम प्रकाश	लिपिक	31-07-2022
10.	आशोक कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31-08-2022
11.	हेम सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	31-08-2022
12.	राकेश कपिल	वरिष्ठ लेखाकार	31-08-2022
13.	राजीव कुमार सिक्का	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-09-2022
14.	रमेश कुमार पासी	वरिष्ठ लेखाकार	31-10-2022
15.	किरण रानी	पर्यवेक्षक	31-10-2022
16.	भूरी राम	वरिष्ठ लेखाकार	30-11-2022
17.	प्रेम दत्त तिवारी	वरिष्ठ लेखाकार	30-11-2022
18.	रोशन लाल	वरिष्ठ लेखाकार	30-11-2022
19.	संजय कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-11-2022
20.	सुभाष चन्द धीमान	वरिष्ठ लेखाकार	30-11-2022
21.	सुभाष चंद्र बनवार	सहायक पर्यवेक्षक	30-11-2022
22.	बलबीर सिंह	सहायक लेखा अधिकारी	31-12-2022
23.	अमरजीत सिंह	एम टी एस	31-12-2022
24.	राजीव गुप्ता	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31-01-2023
25.	आशोक कुमार जैन	सहायक लेखा अधिकारी	31-01-2023

बच्चों को विदेशी लिपि की शिक्षा देना उनको राष्ट्र के सच्चे प्रेम से वंचित करना है।

सेवानिवृति सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
26.	रजनी बाला शर्मा	पर्यवेक्षक	31-01-2023
27.	गुरशरण दास	वरिष्ठ लेखाकार	31-01-2023
28.	सुभाष चंद	एम टी एस	28-02-2023
29.	सरोज बंसल	पर्यवेक्षक	31-03-2023
30.	हेमंत शर्मा	पर्यवेक्षक	31-03-2023
31.	वरिंदर कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	31-03-2023
32.	माडू राम	सहायक पर्यवेक्षक	31-03-2023
33.	रेणु कौल	वरिष्ठ लेखाकार	31-03-2023
34.	सतपाल सिंह	पर्यवेक्षक	31-03-2023
35.	राम सिंह	लेखाकार	31-03-2023
36.	सुधन सिंह	लेखाकार	31-03-2023
37.	अनिल कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-04-2023
38.	हंस राज	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30-04-2023
39.	सुनीता कम्बोज	सहायक लेखा अधिकारी	30-04-2023
40.	अवतार सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	30-04-2023
41.	राजिन्द्र सिंह	एम टी एस	30-04-2023
42.	सुरजीत सिंह	एम टी एस	30-04-2023
43.	निर्मला देवी	एम टी एस	30-04-2023
44.	सुशील कुमार वशिष्ठ	पर्यवेक्षक	30-06-2023

हिंदी दिवस/पखवाड़ा-2022 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी

क्रम सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगी का नाम
1)	हिंदी निबंध	**राजकुमार**, लेखाकार पेंशन-1, (प्रथम) **नितीश कुमार**, एमटीएस, पें.क.से. (द्वितीय) **आशीष कुमार**, लेखाकार, पेंशन-12 (तृतीय)
2)	भाषण	**आशीष कुमार**, लेखाकार, पेंशन-12, (प्रथम) **अंकित कुमार ठाकुर**, लेखाकार, डायरी अनुभाग, (द्वितीय) **प्रमोद कुमार गुप्ता**, लेखाकार, सीआरटी, (तृतीय)
3)	आलेखन/टिप्पण एवं अनुवाद	**राजेंद्र प्रसाद**, डीईओ, टीएम(टी), (प्रथम) **राजकुमार**, लेखाकार पेंशन-1, (द्वितीय) **पंकज अरोड़ा**, लिपिक, वित्त एवं विनियोग लेखा अनुभाग, (तृतीय)
4)	श्रुत लेखन	**रवि कुमार राज**, एमटीएस, सीआरटी डायरी अनुभाग, (प्रथम) **नीतीश कुमार**, एमटीएस, पें.के.से. एवं लोकेश, हाउस कीपिंग स्टाफ, कल्याण अनुभाग, (द्वितीय)
5)	हिंदी शब्द ज्ञान	**अंकित कुमार ठाकुर**, लेखाकार डायरी अनुभाग, (प्रथम) **चाँद सिंह**, वरि. लेखाकार, डायरी अनुभाग, (द्वितीय) **रवि कुमार राज**, एमटीएस, सीआरटी, डायरी अनुभाग, (द्वितीय) **राजेंद्र प्रसाद**, डीईओ, टीएम(टी), (द्वितीय)
6)	कंप्यूटर टाइपिंग	**सुशील कुमार**, लिपिक, वित् एवं विनियोग लेखा, (प्रथम) **सोहन लाल**, वरि. लेखाकार, उप महालेखाकार(प्रशा.) सचिवालय, (द्वितीय) **दिनेश कुमार**, डीईओ, पीसीएस-2, (तृतीय)
7)	कविता पाठ	**आशीष कुमार**, लेखाकार, पेंशन-12, (प्रथम) **आलोक शर्मा**, सहायक पर्यवेक्षक, कल्याण अनुभाग, (द्वितीय) **प्रमोद कुमार गुप्ता**, लेखाकार, सीआरटी, (तृतीय) **चाँद सिंह**, वरि. लेखाकार, डायरी अनुभाग (तृतीय)

हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजयी प्रतिभागी

क्रम सं.	नाम सर्व श्री/श्रीमती	पदनाम	अनुभाग	पुरस्कार
1)	श्री राजकुमार	लेखाकार	पेंशन-1 अनुभाग	प्रथम
2)	श्री इन्द्र कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	निधि पत्राचार-1	प्रथम
3)	श्री विनोद कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	महालेखाकार सचिवालय	द्वितीय
4)	श्री आशोक कुमार	लेखाकार	पेंशन-12 अनुभाग	द्वितीय
5)	श्री प्रेम दत्त तिवाड़ी	वरि. लेखाकार	पीसीएस-4	द्वितीय
6)	श्री सोहन लाल	वरि. लेखाकार	उप-महा (प्रशा.) सचिवालय	तृतीय
7)	श्री राधा कृष्ण	लेखाकार	बुक अनुभाग	तृतीय
8)	श्री दिनेश कुमार	डीईओ	पीसीएस-2	तृतीय
9)	श्री जगदीश चन्द्र	लिपिक	विभागीय कैंटीन	तृतीय
10)	श्री राजेश कुमार शर्मा	लेखाकार	सीआरटी	तृतीय

गृह पत्रिका नवकिरण के श्रेष्ठ लेखकों हेतु पुरस्कार

क्रम सं.	नाम सुश्री/श्री/श्रीमती	पदनाम	पुरस्कार
1)	अमित कुमार सिंघल	वरि. लेखाकार प्रशा.-2	प्रथम
2)	अंकित कुमार ठाकुर	लेखाकार, डायरी अनुभाग	द्वितीय
3)	शिव वर्मा	लेखाकार, निधि-7	तृतीय

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान पुरस्कार वितरण

कार्यलय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तस्वीरें

उत्तर क्षेत्र आईए एवं एडी हॉकी टूर्नामेंट की एक झलक

वार्षिक कार्यक्रम ''सबरंग'' की एक झलक

भारत सरकार गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाऐं रखेगें, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा – हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

प्लॉट नं. 4 – 5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़
www.aghry.nic.in